

سُورَةُ الرُّومِ

Surah 30 — Ar-Room (The Romans) · Meccan · 60 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलिफ़ लाम मीम

2

غَلَبَتِ الرُّومُ

(यहाँ से) बहुत करीब के मुल्क में रोमी (नसारा अहले फ़ारस आतिश परस्तों से) हार गए

3

فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ

मगर ये लोग अनक़रीब ही अपने हार जाने के बाद चन्द सालों में फिर (अहले फ़ारस पर) ग़ालिब आ जाएँगे

4

فِي بَضْعِ سِنِينَ ۚ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۚ وَيَوْمَئِذٍ ۚ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ

क्योंकि (इससे) पहले और बाद (गरज़ हर ज़माने में) हर अम्र का एख्तेयार खुदा ही को है और उस दिन ईमानदार लोग खुदा की मदद से खुश हो जाएँगे

5

بِنَصْرِ اللَّهِ ۚ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह (सब पर) ग़ालिब रहम करने वाला है

6

وَعَدَ اللَّهُ ۚ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(ये) खुदा का वायदा है) खुदा अपने वायदे के खिलाफ नहीं किया करता मगर अकसर लोग नहीं जानते हैं

7

يَعْلَمُونَ ظُهُراً ۚ مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ

ये लोग बस दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं और ये लोग आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا؟ فِي أَنْفُسِهِمْ؟ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى؟ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكَفُرُونَ

क्या उन लोगों ने अपने दिल में (इतना भी) गौर नहीं किया कि खुदा ने सारे आसमान और ज़मीन को और जो चीज़े उन दोनों के दरमियान में हैं बस बिल्कुल ठीक और एक मुक़रर मियाद के वास्ते पैदा किया है और कुछ शक नहीं कि बहुतेरे लोग तो अपने परवरदिगार की (बारगाह) के हुज़ूर में (क्रयामत) ही को किसी तरह नहीं मानते

أَوَلَمْ يَسِيرُوا؟ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا؟ كَيْفَ كَانَ عِقَبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ؟ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ؟ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

क्या ये लोग रुए ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इनसे पहले गुज़र गए उनका अन्जाम कैसा (बुरा) हुआ हालाँकि जो लोग उनसे पहले क़वत में भी कहीं ज़्यादा थे और जिस क़दर ज़मीन उन लोगों ने आबाद की है उससे कहीं ज़्यादा (ज़मीन की) उन लोगों ने काश्त भी की थी और उसको आबाद भी किया था और उनके पास भी उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौज़िज़े लेकर आ चुके थे (मगर उन लोगों ने न माना) तो खुदा ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया मगर वह लोग (कुफ़र व सरकशी से) आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे

ثُمَّ كَانَ عِقَبَةُ الَّذِينَ أُسُوا؟ السُّوْءَىٰ أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ

फिर जिन लोगों ने बुराई की थी उनका अन्जाम बुरा ही हुआ क्योंकि उन लोगों ने खुदा की आयतों को झुठलाया था और उनके साथ मसखरा पन किया किए

اللَّهُ يَبْدُو؟ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ؟ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

खुदा ही ने मखलूकात को पहली बार पैदा किया फिर वही दुबारा (पैदा करेगा) फिर तुम सब लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ

और जिस दिन क़यामत बरपा होगी (उस दिन) गुनेहगार लोग ना उम्मीद होकर रह जाएँगे

13

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاۗءُ ۚ وَكَانُوا۟ بِشُرَكَائِهِمْ كُفَرِينَ

और उनके (बनाए हुए खुदा के) शरीकों में से कोई उनका सिफारिशी न होगा और ये लोग खुद भी अपने शरीकों से इन्कार कर जाएँगे

14

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومَدُونَ ۚ يَتَفَرَّقُونَ

और जिस दिन कयामत बरपा होगी उस दिन (मोमिनों से) कुफ़ार जुदा हो जाएँगे

15

فَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ الصَّٰلِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ ۚ يُحْبَرُونَ

फिर जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो वह बाग़े बेहश्त में निहाल कर दिए जाएँगे

16

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ ٱلْءَاخِرَةِ فَأُو۟لَٰئِكَ فِي ٱلْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ

मगर जिन लोगों के कुफ़ एख्तेयार किया और हमारी आयतों और आखेरत की हुजूरी को झुठलाया तो ये लोग अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएँगे

17

فَسُبْحٰنَ ٱللّٰهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ

फिर जिस वक्त तुम लोगों की शाम हो और जिस वक्त तुम्हारी सुबह हो खुदा की पाकीज़गी ज़ाहिर करो

18

وَلَهُ ٱلْحَمْدُ فِى ٱلسَّمَٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَعَشِيًّاۙ وَحِينَ تُظْهِرُونَ

और सारे आसमान व ज़मीन में तीसरे पहर को और जिस वक्त तुम लोगों की दोपहर हो जाए वही क़ाबिले तारीफ़ है

19

يُخْرِجُ ٱلْحَيَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَيِّ وَيُحْيِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ

वही ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और वही मुर्दे को ज़िन्दा से पैदा करता है और ज़मीन को मरने (परती होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) करता है और इसी तरह तुम लोग भी (मरने के बाद निकाले जाओगे)

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ۚ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ ۚ تَنْتَشِرُونَ

और उस (की कुदरत) की निशानियों में ये भी है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर यकायक तुम आदमी बनकर (ज़मीन पर) चलने फिरने लगे

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا ۚ لِتَسْكُنُوا ۚ إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً ۚ وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَءَايَاتٍ ۚ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

और उसी की (कुदरत) की निशानियों में से एक ये (भी) है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी ही जिन्स की बीवियाँ पैदा की ताकि तुम उनके साथ रहकर चैन करो और तुम लोगों के दरमियान प्यार और उलफ़त पैदा कर दी इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर करने वालों के वास्ते (कुदरते खुदा की) यकीनी बहुत सी निशानियाँ हैं

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ خَلَقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ السِّنِينَ وَالْوَنُكُم ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَءَايَاتٍ ۚ لِلْعَلَمِينَ

और उस (की कुदरत) की निशानियों में आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का एख़तेलाफ़ भी है यकीनन इसमें वाक्फ़िकारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَءَايَاتٍ ۚ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ

और रात और दिन को तुम्हारा सोना और उसके फ़ज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश करना भी उसकी (कुदरत की) निशानियों से है बेशक जो लोग सुनते हैं उनके लिए इसमें (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ وَيُنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَءَايَاتٍ ۚ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

और उसी की (कुदरत की) निशानियों में से एक ये भी है कि वह तुमको डराने वाला उम्मीद लाने के वास्ते बिजली दिखाता है और आसमान से पानी बरसाता है और उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके परती होने के बाद आबाद करता है बेशक अक्लमंदों के वास्ते इसमें (कुदरते खुदा की) बहुत सी दलीलें हैं

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ۚ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۚ مِنْ
الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ

और उसी की (कुदरत की) निशानियों में से एक ये भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से कायम हैं फिर (मरने के बाद) जिस वक्त तुमको एक बार बुलाएगा तो तुम सबके सब ज़मीन से (ज़िन्दा हो होकर) निकल पड़ोगे

وَلَهُ ۚ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلُّ ۚ لَهُ ۚ قُنُوتُونَ

और जो लोग आसमानों में है सब उसी के है और सब उसी के ताबेए फरमान हैं

وَهُوَ الَّذِي يَبْدُوهُ ۚ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और वह ऐसा (कादिर मुत्तालिक् है जो मखलूकात को पहली बार पैदा करता है फिर दोबारा (क़यामत के दिन) पैदा करेगा और ये उस पर बहुत आसान है और सारे आसमान व ज़मीन सबसे बालातर उसी की शान है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا ۚ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۚ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَآ
رَزَقْنَكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۚ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ ۚ يَعْقِلُونَ

और हमने (तुम्हारे समझाने के वास्ते) तुम्हारी ही एक मिसाल बयान की है हमने जो कुछ तुम्हे अता किया है क्या उसमें तुम्हारी लौन्डी गुलामों में से कोई (भी) तुम्हारा शरीक है कि (वह और) तुम उसमें बराबर हो जाओ (और क्या) तुम उनसे ऐसा ही खौफ रखते हो जितना तुम्हें अपने लोगों का (हक़ हिस्सा न देने में) खौफ होता है फिर बन्दों को खुदा का शरीक क्यों बनाते हो) अक्ल मन्दों के वास्ते हम यूँ अपनी आयतों को तफसीलदार बयान करते हैं

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ ۚ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ

मगर सरकारों ने तो बगैर समझे बूझे अपनी नफसियानी स्वाहिशों की पैरवी कर ली (और खुदा का शरीक ठहरा दिया) गरज खुदा जिसे गुमराही में छोड़ दे (फिर) उसे कौन राहे रास्त पर ला सकता है और उनका कोई मददगार (भी) नहीं

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ۚ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम बातिल से कतरा के अपना रुख दीन की तरफ किए रहो यही खुदा की बनावट है जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है खुदा की (दुरुस्त की हुई) बनावट में तगय्युर तबद्दुल (उलट फेर) नहीं हो सकता यही मजबूत और (बिल्कुल सीधा) दीन है मगर बहुत से लोग नहीं जानते हैं

ۚ ۚ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا ۚ ۚ الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا ۚ ۚ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

उसी की तरफ रुजू होकर (खुदा की इबादत करो) और उसी से डरते रहो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और मुशरेकीन से न हो जाना

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا ۚ ۚ دِينَهُمْ وَكَانُوا ۚ ۚ شِيَعًا ۚ ۚ كُلُّ حِزْبٍ ۚ ۚ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ

जिन्होंने अपने (असली) दीन में तफरेका परवाज़ी की और मुख्तलिफ़ फिरके के बन गए जो (दीन) जिस फिरके के पास है उसी में निहाल है

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ ۚ ۚ دَعَوْا ۚ ۚ رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ ۚ ۚ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ

और जब लोगों को कोई मुसीबत छू भी गयी तो उसी की तरफ रुजू होकर अपने परवरदिगार को पुकारने लगते हैं फिर जब वह अपनी रहमत की लज्जत चखा देता है तो उन्हीं में से कुछ लोग अपने परवरदिगार के साथ शिर्क करने लगते हैं

لِيَكْفُرُوا؟ بِمَا آتَيْنَاهُمْ؟ فَتَمَتَّعُوا؟ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

ताकि जो (नेअमत) हमने उन्हें दी है उसकी नाशुकी करें खैर (दुनिया में चन्दरोज़ चैन कर लो) फिर तो बहुत जल्द (अपने किए का मज़ा) तुम्हे मालूम ही होगा

أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا؟ فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا؟ بِهِ؟ يُشْرِكُونَ

क्या हमने उन लोगों पर कोई दलील नाज़िल की है जो उस (के हक़ होने) को बयान करती है जिसे ये लोग खुदा का शरीक ठहराते हैं (हरगिज़ नहीं)

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً؟ فَرِحُوا؟ بِهَا؟ وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ؟ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ

और जब हमने लोगों को (अपनी रहमत की लज़्ज़त) चखा दी तो वह उससे खुश हो गए और जब उन्हें अपने हाथों की अगली कारसतानियो की बदौलत कोई मुसीबत पहुँची तो यकवारगी मायूस होकर बैठे रहते हैं

أَوَلَمْ يَرَوْا؟ أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ؟ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

क्या उन लोगों ने (इतना भी) ग़ौर नहीं किया कि खुदा ही जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और (जिसकी चाहता है) तंग करता है-कुछ शक नहीं कि इसमें ईमानरदार लोगों के वास्ते (कुदरत खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

فَأَتِذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ؟ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ؟ ذَلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ؟ وَأُو؟ لَّئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

(तो ऐ रसूल अपनी) कराबतदार (फातिमा ज़हरा) का हक़ फिदक दे दो और मोहताज व परदेसियों का (भी) जो लोग खुदा की खुशनूदी के ख्वाहों हैं उन के हक़ में सब से बेहतर यही है और ऐसे ही लोग आखेरत में दिली मुरादे पाएँगे

وَمَا ءَاتَيْتُمْ مِّن رَّبٍّ ۚ لَّا لِيَرْبُؤَا ۚ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُؤَا ۚ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا ءَاتَيْتُمْ
مِّن زَكَاةٍ ۚ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ

और तुम लोग जो सूद देते हो ताकि लोगों के माल (दौलत) में तरक्की हो तो (याद रहे कि ऐसा माल) खुदा के यहाँ फूलता फलता नहीं और तुम लोग जो खुदा की खुशनूदी के इरादे से ज़कात देते हो तो ऐसे ही लोग (खुदा की बारगाह से) दूना दून लेने वाले हैं

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ هَلْ مِن شُرَكَائِكُمْ مَّن يَفْعَلُ
مِن ذَٰلِكُمْ مِّن شَيْءٍ ۚ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ

खुदा वह (क्रादिर तवाना है) जिसने तुमको पैदा किया फिर उसी ने रोज़ी दी फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको (दोबारा) ज़िन्दा करेगा भला तुम्हारे (बनाए हुए खुदा के) शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके जिसे ये लोग (उसका) शरीक बनाते हैं

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا ۚ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

वह उससे पाक व पाकीज़ा और बरतर है खुद लोगों ही के अपने हाथों की कारस्तानियों की बदौलत खुश्क व तर में फसाद फैल गया ताकि जो कुछ ये लोग कर चुके हैं खुदा उन को उनमें से बाज़ करतूतों का मज़ा चखा दे ताकि ये लोग अब भी बाज़ आएँ

قُلْ سِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الَّذِينَ مِن قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ज़रा रुए ज़मीन पर चल फिरकर देखो तो कि जो लोग उसके क़ब्त गुज़र गए उनके (अफ़आल) का अंजाम क्या हुआ उनमें से बहुतेरे तो मुशरिक ही हैं

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ يَصْدَعُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम उस दिन के आने से पहले जो खुदा की तरफ से आकर रहेगा (और) कोई उसे रोक नहीं सकता अपना रुख मजबूत (और सीधे दीन की तरफ किए रहो उस दिन लोग (परेशान होकर) अलग अलग हो जाएँगे

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا ۖ فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ

जो काफ़िर बन बैठा उस पर उस के कुफ़्र का वबाल है और जिन्होंने अच्छे काम किए वह अपने ही आसाइश का सामान कर रहे हैं

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ

ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम किए उनको खुदा अपने फज़ल व (करम) से अच्छी जज़ा अता करेगा वह यकीनन कुफ़ार से उलफ़त नहीं रखता

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَّاحَ مُبَشِّرَاتٍ ۚ وَلِيُذِيقَكُمْ مِّن رَّحْمَتِهِ ۚ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ ۚ وَلِتَبْتَغُوا ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

उसी की (कुदरत) की निशानियों में से एक ये भी है कि वह हवाओं को (बारिश) की खुशखबरी के वास्ते (क़बूल से) भेज दिया करता है और ताकि तुम्हें अपनी रहमत की लज्जत चखाए और इसलिए भी कि (इसकी बदौलत) कश्तियां उसके हुक्म से चल खड़ी हो और ताकि तुम उसके फज़ल व करम से (अपनी रोज़ी) की तलाश करो और इसलिए भी ताकि तुम शुक्र करो

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاَنْتَقَمْنَا مِنْ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۚ ۚ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ

औ (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले और भी बहुत से पैग़म्बर उनकी क़ौमों के पास भेजे तो वह पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन लेकर आए (मगर उन लोगों ने न माना) तो उन मुजरिमों से हमने (ख़ूब) बदला लिया और हम पर तो मोमिनीन की मदद करना लाज़िम था ही

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا ۖ فَيَبْسُطُهُ ۚ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ ۚ كِسْفًا ۖ فَنَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ ۚ ۚ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ

खुदा ही (कादिर तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो वह बादलों को उड़ाए उड़ाए फिरती हैं फिर वही खुदा बादल को जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और (कभी) उसको टुकड़े (टुकड़े) कर देता है फिर तुम देखते हो कि बूंदियां उसके दरमियान से निकल पड़ती हैं फिर जब खुदा उन्हें अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है बरसा देता है तो वह लोग खुशियाँ मानने लगते हैं

وَإِنْ كَانُوا ۚ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهِ ۚ لَمُبْلِسِينَ

अगरचे ये लोग उन पर (बाराने रहमत) नाज़िल होने से पहले (बारिश से) शुरू ही से बिल्कुल मायूस (और मज़बूर) थे

فَانْظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتَىٰ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

गरज़ खुदा की रहमत के आसार की तरफ देखो तो कि वह क्योंकर ज़मीन को उसकी परती होने के बाद आबाद करता है बेशक यकीनी वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला और वही हर चीज़ पर कादिर है

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا ۖ فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا ۖ لَّظَلُّوا ۚ مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ يَكْفُرُونَ

और अगर हम (खेती की नुकसान देह) हवा भेजें फिर लोग खेती को (उसी हवा की वजह से) ज़र्द (परस मुर्दा) देखें तो वह लोग इसके बाद (फौरन) नाशुकी करने लगें

فَإِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمَعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا ۚ مُدْبِرِينَ

(ऐ रसूल) तुम तो (अपनी) आवाज़ न मुर्दों ही को सुना सकते हो और न बहरों को सुना सकते हो (खुसूसन) जब वह पीठ फेरकर चले जाएँ

53

وَمَا أَنْتَ بِهَدِ الْعُمَىٰ عَنْ ضَلَّاتِهِمْ ۚ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ

और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से (फेरकर) राह पर ला सकते हो तो तुम तो बस उन्हीं लोगों को सुना (समझा) सकते हो जो हमारी आयतों को दिल से मानें फिर यही लोग इस्लाम लाने वाले हैं

54

ۚ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ۚ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ ۚ بَعْدِ ضَعْفٍ ۚ قُوَّةً ۚ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ ۚ بَعْدِ قُوَّةٍ ۚ ضَعْفًا ۚ وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ

खुदा ही तो है जिसने तुम्हें (एक निहायत) कमजोर चीज़ (नुत्फे) से पैदा किया फिर उसी ने (तुम में) बचपने की कमजोरी के बाद (शबाब की) कूवत अता की फिर उसी ने (तुममें जवानी की) कूवत के बाद कमजोरी और बुढ़ापा पैदा कर दिया वह जो चाहता पैदा करता है-और वही बड़ा वाकिफकार और (हर चीज़ पर) काबू रखता है

55

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا ۚ غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَلِكَ كَانُوا ۚ يُؤْفَكُونَ

और जिस दिन क़यामत बरपा होगी तो गुनाहगार लोग कसमें खाएँगे कि वह (दुनिया में) घड़ी भर से ज्यादा नहीं ठहरे यूँ ही लोग (दुनिया में भी) इफ़तेरा परदाज़ियाँ करते रहे

56

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

और जिन लोगों को (खुदा की बारगाह से) इल्म और ईमान दिया गया है जवाब देंगे कि (हाए) तुम तो खुदा की किताब के मुताबिक़ रोज़े क़यामत तक (बराबर) ठहरे रहे फिर ये तो क़यामत का ही दिन है मगर तुम लोग तो उसका यकीन ही न रखते थे

57

فَيَوْمَئِذٍ ۚ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مَعذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ

तो उस दिन सरकश लोगों को न उनकी उज्र माअज़ेरत कुछ काम आएगी और न उनकी सुनवाई होगी

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ ۙ لَيَقُولَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ

और हमने तो इस कुरान में (लोगों के समझाने को) हर तरह की मिसल बयान कर दी और अगर तुम उनके पास कोई सा मौजिज़ा ले आओ

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ

तो भी यक़ीनन कुफ़्फ़ार यही बोल उठेंगे कि तुम लोग निरे दगाबाज़ हो जो लोग समझ (और इल्म) नहीं रखते उनके दिलों पर नज़र करके खुदा यूँ तसदीक़ करता है (कि ये ईमान न लाएँगे)

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम सब्र करो बेशक़ खुदा का वायदा सच्चा है और (कहीं) ऐसा न हो कि जो (तुम्हारी) तसदीक़ नहीं करते तुम्हें (बहका कर) ख़फ़ीफ़ करे दें